International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-10-2023, Accepted: 22-10-2023, Published: 07-11-2023
Volume 9, Issue 6, 2023, Page No. 1-3

गोदानः कृशक जीवन की महाकाव्यात्मक त्रासदी

Umashankar Ray
UGC NET&JRF, Depatment of Hindi, Lalit Narayan Mithila University, Directorate of Distance Education-Darbhanga, Bihar, India

सारांश
गोदान सन 1936 मे ंप्रकाशित प्रेमचन्द का कृषक समस्या पर आधृत महाकाव्यात्मक उपन्यास है जो कि उनकी उपन्यास कला का चरमोत्कर्ष है। साहित्य को समाज से जोड़ने का काम प्रेमचन्द ने किया। उन्होनें किसानों की समस्याओं को अनेक प्रकार से रूपायित किया तथा देश के अन्नदाता की दिन–हीन परिस्थिति को ऐसे यर्थाथ भावों से रचा की, पाठक के सामने विचारणीय परिस्थिति खड़ी हो गई। किसान का शोषण कितने मुहाने पर और किस प्रकार होता है इसका चित्रण 'गोदान' में होरी की कथा के माध्यम से किया गया है। 'गोदान में शोषण के जिन तरीकों को बताया गया है, उसका स्वरूप आज की वर्तमान परिस्थिति में भी वैसा हीं आभाषित होता है। कृषक समस्या का जैसा चित्रण गोदान मे ंमिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

मूल शब्दः महाकाव्यात्मक, अन्नदाता, प्रतिनिधित्व, विडम्बना, विरोधाभाष, रूढ़िवादिता, क्रोधाभिभूत, दरिद्रीकरण, क्षणभंगुर, भग्यविधाता, महाकाव्य, शुभेच्छु आदि

गोदान उपन्यास कृषक जीवन का महाकाव्य माना जाता है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रेमचन्द ने भारतीय ग्राम्य जीवन की अत्मा को सशक्त अभिव्यक्ति दी है। इसी कारण डॉ0 गंगा प्रसाद 'विमल' ने इसे भारतीय ग्रामीन जीवन की समस्याओं का महाकाव्य और गीता की उपाधी दी है। प्रेमचन्द के लेखन का सरोकार ग्रामीन जीवन विशेषकर कृषक वर्ग से था। उनकी पिड़ा, शोषण और कठिनाईयों से भली–भॉति अवगत थे और चाहते थे कि जमींदारी प्रथा समाप्त हो जो किसानों के शोषण के लिए बहुत कुछ उत्तरदायी थी।

गोदान में प्रेमचन्द ने 'होरी' के रूप में जिस चरित्र की परिकल्पना की है वह अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। सभी किसानों की हालत कमोवेश 'होरी' जैसी हीं है। अवध क्षेत्र के बलोरी गाँव का होरी पाँच बीघे जमीन का मालीक एक सामान्य कृषक है। जमींदार, पटवारी, सूदखोर, महाजन, पुलिस, बिरादरी तथा धर्म के ठेकेदार सब उसका शोषण करते हैं और अन्ततः शोषण का शिकार होरी किसान से मजदूर बनने को विवश हो जाता है। कैसी विडम्बना है कि भारत का किसान अपनी एक छोटी सी इच्छा को पुरा नही कर पाता। 'होरी' के मन में एक गाय पालने की इच्छा थी। यह 'गाय' उसके प्रतिष्ठा का प्रतीक है। घर के द्वार पर गाय बधी होगी तभी तो लड़के के ब्याह वाले आएंगे और लोग पुछेगें की यह किसका घर है। गाय से वह अपने मान–सम्मान की वृद्धी करना चाहता है। सयोग से उसे भोला की गाय उधार में मिल भी जाती है, किन्तु उसके भाई हिरा की ईर्ष्या भड़क उठती है और वह गाय को जहर दे देता है। गाय के मर जाने से होरी के जीवन का विषाद और भी गहरा हो जाता है। इस गाय ने उसके जीवन को कई रूप में प्रभावित किया था। इसके लिए वह कर्जदार बना, भोला उसके बैल खोल ले गया और उसे किसान से मजदूर बनना पड़ा। अन्ततः वह गाय की अपनी इच्छा पुरी नही कर सका और अब जीवन की अंतिम बलो में उससे गोदान की अपेक्षा की जा रही है। धनीया आज मजदूरी में मिले पैसों को होरी के ठंडे हाथ पर रखकर पंडीत दातादीन को देती हुई कहती है,''महराज'' न गाय है न बछिया न पैसा। यही पैसे है, यही इनका गोदान है।''

प्रेमचन्द ऐसे प्रथम भारतीय उपन्यासकार है जिन्होंने उपन्यासों का उपयोग समाज और जीवन के आलोचना के लिए किया है। उन्होनें अपने उपन्यास में उन समस्याओ ंको चित्रित किया है जो वर्तमान युग से जुड़ी हुई है और जिन्हें हर व्यक्ति अनुभव करता है। प्रेमचन्द एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जहाँ भेदभाव के अभिषाप से मानवता पिड़ित न हो, किसी प्रकार का शोषण न हो, आदमी की पहचान सम्पत्ति और जाती के पैमाने से न हो। गोदान में उनका यही उद्देश्य प्रमुखता से व्यक्त हुआ है। इस उपन्यास का प्रधान उद्देश्य है कृषक जीवन की समस्याआं का चित्रण करना, उसके शोषण का चित्र प्रस्तुत करना और दिन–हीन स्थिति से समाज को परिचित कराना। किसान का शोषण कौन करता है, तथा उसका शोषण कितने मुहानो ंपर होता है और उस शोषण के लिए समाज के कौन–कौन उत्तरदायी हैं इसका सजीव चित्रण गोदान में किया गया है। उपन्यास मनोरंजन की वस्तु नहीं है अपितु वह जीवन की सच्चाईयों को उजागर कर हमें सोंचने–विचारने को विवश करता है और संघर्ष की प्रेरणा प्रदान करता है। अपने उपन्यासों के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए प्रेमचन्द लिखते है, ''हम साहित्य को मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही सहित्य खड़ा उतरेगा जिसमें चित्रण की स्वाधिनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाई का प्रकाश हो, जो हममें गति, संघर्ष और बेचौनी पैदा करे, सुलावे नहीं।''

'गोदान' की रचना कृषक जीवन से जुड़ी हुई समस्याओं का चित्रण करने के लिए की गयी है। होरी कृषक वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है, उसके जीवन का त्रासदी हर किसान के जीवन को प्रस्तुत करती है। जब भारत में जमींदारी प्रथा थी किसान उसके शिकंजे में कसा हुआ था। जमींदार, कारकुन, पटवारी, सुदखोर महाजन आदि तो उसका शोषण करते हीं है, इसके अतिरिक्त पुलिस, व्यापारी, धर्म के ठेकेदार, समाज के ठेकेदार भी उसका शोषण करते हैं। यह कैसा विरोधाभाष है कि जो किसान सारे संसार के लिए अन्न उपजाता है, वही खुद भूखा है।

यह भी विडम्बना हीं है कि अपने शोषकों के बारे में होरी जैसा किसान अच्छी तरह जानता है फिर भी, रूढियों और संस्कारों से

बंधा हुआ होने के कारण वह उनके प्रति क्रोधाभिभूत नही हो पाता। इस शोषण के लिए वह अपने भाग्य को दोषी मानता है। गोबर को समझाते हुए वह कहता है ''छोटे–बड़े भगवान के घर से बन कर आते हैं। सम्पत्ति बड़ी तपस्या से मिलती है उन्होनें, पर्वू जन्म में जैसे कर्म किए हैं उनका आनंद भोग रहे हैं। हमने कुछ नही सचां तो भोगे क्या? किन्तु गोबर उसकी बात से सहमत नही है वह प्रगतिशील चेतना का प्रतीक है और इस बात को जानता है कि भगवान तो सबको बराबर बनाते हैं। यहाँ जिसके हाथ मे ं लाठी है वह गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।''

किसानो ंके इस शोषण का कारण है उनके सस्ंकार, रूढ़िवादिता और सगंठन का अभाव। वे एक–दूसरें से ईर्ष्या करते है और इसलिए बैल की तरह जमींदार के हल में जुतते रहते है, भोला इस विषय में होरी से कहता है, कौन कहता है कि हम–तुम आदमी हैं। हममें आदमियत कहाँ। आदमी वह है जिसके पास धन है, अख्तियार है, इल्म है। हम लोग तो बैल है और जुतने के लिए पैदा हुए हैं। उस पर एक–दूसरे को देख नहीं सकते एका का नाम नहीं। एक किसान–दूसरे के खेत पर न चढ़े तो जाफा कैसे करें, प्रेम तो संसार से उठ गया।''

जमींदार को किसान से लगान वसलू करने का जायज हक है, किन्तु वे नजराना लेते है, जूर्माना वसलू करते है, इजाफा लगान लेते है और किसानों से बगेार कराते है। रायसाहब अमरपाल सिंह वैसे तो किसानों के शुभेच्छु बनते है किन्तु स्वार्थ नहीं छोड़ सकते। उनकी कथनी और करनी की पोल खोलते हुए प्रोफेसर मेहता कहते है, यदि आप कृषकों के शुभेच्छु है और आप की धारण है कि कृषकों के साथ रियायत होनी चाहिए तो पहले आप खुद शुरू करें, काश्तकारों से नजराना न लें, बेगार बदं कर दे, इजाफाा लगान को तिलांजली दे दें, चरावर जमीन छोड़ दे।''

रायसाहब के साथ मेहता जी की सम्पूर्ण बहस यह ध्वनित करती है कि बुद्धिजीवी लोग हीं रायसाहब जैसे रंगे सियारों की वास्तविकता से अच्छी तरह से परिचित है। शहर के मेहता और गाँव के गोबर जैसे लोग हीं इस शोषण के विरूद्ध आवाज उठाकर समाज को इस अभिशाप से मुक्ति दिला सकते है। किसान का शोषण जमींदार तो करता हीं है किन्तु इस शोषण चक्र में और भी कई लोग शामिल है। गाँव के महाजन और साहूकार भी किसान की मजबरूी का लाभ उठाकर ऊँची दर पर ब्याज वसलू करते हैं। साहूकार के सूद की दर एक आना रूपया से लेकर दो आना रूपया तक है जो 75 प्रतिशत वार्षिक से 150 प्रतिशत वार्षिक तक जा पहुँचती है, किन्तु किसान मजबूर है, कर्ज लेने को विवश है। कभी खाद, कभी बीज के लिए, कभी बैल के लिए तो कभी लगान चुकाने के लिए, तो कभी समाजिक दण्ड की भरपाई के लिए। होरी कहता है, ''कितना चाहता हूँ किसी से एक पैसा कर्ज न लें लेकिन हर तरह के कष्ट उठाने पर भी गला नहीं छुटता।''

सच तो यह है कि कर्ज वह मेहमान है जो एक बार आ जाए फिर जाने का नाम नहीं लेता। होरी को लगता है कि इसी तरह उस पर कर्ज का सूद बढ़ता जाएगा और एक दिन उसका घर द्वार सब नीलाम हो जाएगा और उसके बच्चें निराश्रित होकर भीख माँगते फिरेंगे। अगर सतोष था तो यही कि वह विपत्ति अकेले उसी के सिर न थी। प्रायः सभी किसानों का
यही हाल था।

जमींदार के कर्मचारी, कारकुन, कारिन्दा तथा पटवारी आदि भी किसान का शोषण करते हैं। पुलिस के गण्डासिहं जैसे थानेदारों की मिलीभगत से गाँव के मुखिया भी किसान से मिली रिश्वत के पैसों में अपना हाथ बँटाते हैं।

समाज और धर्म भी किसान का शोषण करने में पीछे नहीं है। झुनिया को घर में आश्रय देने पर गाँव के भग्यविधाताओं नें 100 रूपया दण्ड और तीस मन अनाज जुर्माने के रूप में वसूल किया। दातादीन जैसे धर्म के ठेकेदार किसान का शोषण करते हैं। मृत्यु के अवसर पर होरी से गोदान की अपेक्षा करनेवाले ये तथाकथित धर्म के ठेकेदार समाज के मुँह पर तमाचा मारते हुए से प्रतीत होते हैं। जो व्यक्ति जीवन पर्यत्न एक गाय का जुगाड़ अपने लिए नहीं कर सका उससे मरते समय गोदान के लिए कहना कहाँ का न्याय है पर दातादीन को इससे क्या?

गोदान में प्रेमचन्द जी ने पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त करने का संकल्प व्यक्त किया है। खन्ना पूंजीपतियों के प्रतिनिधि पात्र है। शोषण की प्रक्रिया नगर और गाँव में समान्तर रूप से चलती है। गाँव में जमींदार किसान का शोषण करता है तो नगर में मिल मालिक और पूंजीपति वर्ग मजदूर का शोषण करके अपने प्रभुत्व स्थापित करते हैं।

प्रेमचन्द को यह स्पष्ट दिखा रहा था कि यह शोषण अब अधिक दिनों तक चलने वाला नहीं है । रायसाहब को भी इसका आभाष हो गया था कि जमींदारी प्रथा अब समाप्त होने वाली है व ेकहते है– ''लक्षण कह रहें हैं कि बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जाने वाली है।'' मजदूर अपने पेट के अतिरिक्त और किसी बात पर ध्यान नहीं देता परन्तु जब पर्याप्त परिश्रम के बाद भी उनका पेट खाली रहता है तो वे विद्रोह पर उतर आते है। मिल मालिक खन्नां अपने हंकार में मजदूरों की उचित मजदूी मांगों को भी ठुकरा देते है, परिणामतः हड़ताल होती है और मजदूर खन्ना की मिल में आग लगा देते हैं। शायद गोदान तक आते–आते प्रेमचन्द यह समझने लगे थे कि गाँधीवादी अहिंसा से शोषण को समाप्त नही किया जा सकता उसके लिए तो विद्रोही तेवर अपनाने ही पड़ेंगे। प्रेमचन्द जी ने यह भी सन्देश दिया है कि पूंजी पर अहंकार करना ठीक नहीं क्योकि पूंजी क्षणभंगुर होती है। खन्ना की पत्नी गोविन्दी सात्विक विचारो की महिला है, वह इस आर्थिक हानि पर दुःखी नही होती अपितु उसे वरदान मानती हुई कहती है।

''जीवन का सुख दूसरों को सुखी करने मे है, उन्हें लूटने में नहीं। मेरे विचार से तो पीड़क होने से पीड़ित होना कहीं श्रेष्ठ है। धन खोकर हम अपनी आत्मा को पा सके तो यह कोई महंगा सौदा नही है।''

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि गोदान में होरी की व्यथा कथा के विभिन्न स्तरों के उद्घाटन के क्रम में भारतीय किसान अपनी समूची समस्याओं, शक्तिओं एवं सीमाओं के साथ उपस्थित है। साथ हीं प्रेमचन्द ने ग्रामीन कथा के सयोजन द्वारा अपने युग को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द ने गोदान में उपनिवेशवादी नीतियों से बर्बाद होते भारतीय कृषक जीवन और इसके लिए जिम्मेदार ताकतो की जो पहचान आज के 75 साल पहले की थी वह आज भी समाज मे ंउसी रूप में उपस्थित है। कृषकों की हालत मे फर्क नहीं आया है बल्कि किसान का दरिद्रीकरण तेज हीं हुआ है। किसानो ंको खेती से सिर्फ कपड़ा और खाना नसीब हो जाए वही बहुत है। बच्चो ंकी पढ़ाई–लिखाई के लिए आर्थिक ससांधन अब भी उसके पास नहीं है। फसल की बुआई के लिए अब भी उसे कर्ज लेना पड़ता है। आज किसानों को लुटने के लिए मिलों की जगह बहुराष्ट्रिय कंपनियाँ आ गई है, यहाँ तक की, जातीगत भेद भाव भी घटने के बजाए बढा हीं है। गोदान अपनी सम्पूर्ण समस्या लिए आज भी कृषक जीवन की
यथार्थपूर्ण त्रासदी को व्यक्त करने मे ंअपनी पर्णू प्रसंगिता सिद्ध करती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ0 नामवर सिंह,'आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ', पृष्ट–144, चतुर्थ संस्करण–1960, लोकभारती प्रकाशन–इलाहाबाद
2. प्रेमचन्द, 'गोदान' मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली–110084
3. डॉ0 राविलास शर्मा,'प्रेमचन्द और उसका युग', पृष्ट–17
4. वही पृष्ठ–97
5. डॉ0 कृष्णदेव भक्तरी,'प्रेमचन्द की उपन्यास–कला का उत्कर्स', पृष्ट–9
6. वहीं पृष्ट–11
7. वहीं पृष्ट–107
8. माया अग्रवाल, 'गोदान एक विवचेन', पृष्ट–105
9. वही पृष्ठ–106
10. अमृत राय, 'कलम के सिपाही', पृष्ट–219, साहित्य अकादमी–नई दिल्ली
11. श्री मन्मथनाथ गुप्त, 'प्रेमचन्द', पृष्ठ–91
12. वहीं पृष्ठ– 176
13. वहीं पृष्ठ– 197
14. इन्द्रनाथ मदान, 'प्रेमचन्दः चिंतन और कला, पृष्ठ– 11